

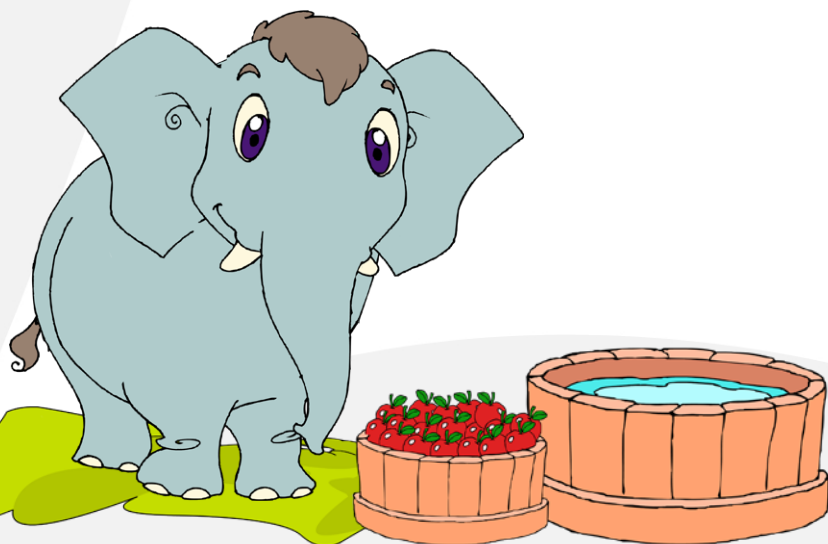
हाथी शहर को गया

लेखक - अमित गर्ग

एक बड़े शहर के बीच एक छोटा-सा चिड़ियाघर था, और उसमें एक नन्ही हथिनी रहती थी। उसका नाम रोज़ा था। चिड़ियाघर का रखवाला नन्ही रोज़ा से बहुत प्यार करता था और हर तरह से उसका ध्यान रखता था। बहुत से दर्शक रोज़ा को देखने आते और मंत्रमुग्ध हो उसे एक बार में एक दर्जन केले खाते देखते! रोज़ा की देखभाल अच्छी तरह होती थी, लेकिन उसे दूसरे हाथियों का न होना अखरता था।

एक दिन रोज़ा को खिलाने के बाद रखवाला उसके पिंजरे का दरवाज़ा बंद करना भूल गया। शीघ्र ही वह चिड़ियाघर के बाहर थी! पहले, उसका सामना हुआ एक आइसक्रीम-वाले से जो सड़क के किनारे खड़ा था। उसने रोज़ा को देखा और भाग खड़ा हुआ। नन्ही हथिनी ने जिज्ञासा से अपनी सूँड़ आइसक्रीम के डब्बे में डाली। कुछ चीज़ इतनी ठंडी, मीठी और स्वादिष्ट थी कि वह सारा का सारा निगल गई।

रोज़ा घूमती रही, उसकी आँखें किसी को खोज रही थीं। अंत में, एक दुकान में उसने टी.वी. के एक पर्दे पर हाथियों का एक झुंड देखा! “मित्र!” उसने सोचा और टी.वी. की दुकान में घुस गई। दुकान के अंदर जो भी था उसे अकेला छोड़कर, बाहर भागा। रोज़ा ने बात करनी चाही टी.वी. के ऊपर दिखते हाथियों से, लेकिन उन्होंने उत्तर नहीं दिया। दुविधा और निराशा से भरी वह बाहर चल दी।



गली में लौटने पर उसने देखा एक नारियल बेचने वाला नारियल बेच रहा था। “वाह! मुझे एक गेंद मिल गई! अब यह खेलने का समय है!” वह बोली और ठोकर लगाकर उसने एक नारियल ऊपर हवा में उछाल दिया। वह उड़ता हुआ सड़क के पार एक लड़के के ठीक बगल में जा गिरा, जो पार्क में खेल रहा था।

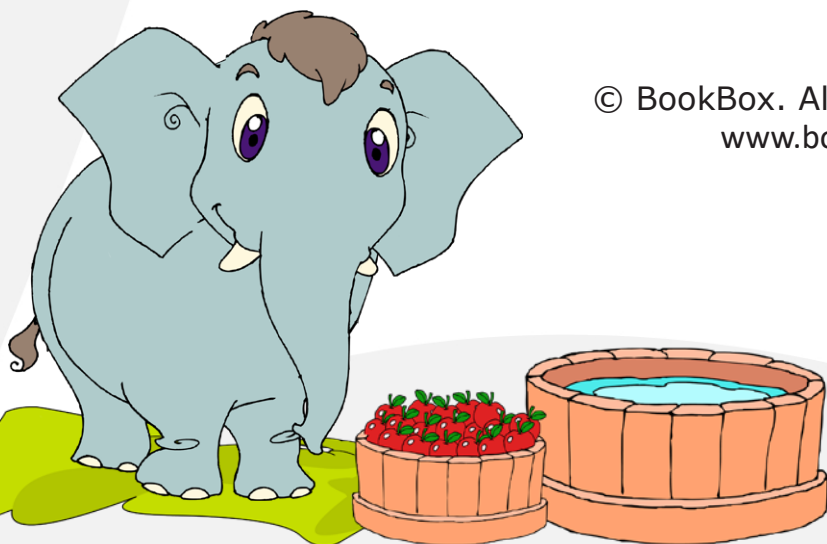
रोज़ा किसी तरह अपनी नारियल की गेंद लेने सड़क के पार दौड़ी। कारें चीख उठीं, बसों के हॉर्न बज उठे, ड्राइवर एक-दूसरे पर चिल्लाने लगे। रोज़ा ने रास्ता जाम करवा दिया था। ट्रैफिक पुलिस नियंत्रण रखने में लगी थी। चिड़ियाघर को सूचना दी गई। अपने आस-पास के शोर-गुल से बेफ़िक्र, रोज़ा सीधी पार्क में दौड़ी।

वह उस नन्हे लड़के के सामने रुकी, जो उसे देखकर मुस्कुरा रहा था। वह खिलखिलाया और उसने हथिनी को थपथपाया। उत्साह से भरी रोज़ा अपने नए दोस्त की तरफ फिर से चिंघाड़ उठी। अब तक चिड़ियाघर का रखवाला पार्क में पहुँच चुका था। रोज़ा को पार्क की खुली जगह में देख वह समझ गया कि वह पिंजरे में कभी खुश नहीं रह पाएगी।

चिड़ियाघर ने रोज़ा को शहर से दूर, एक सुरक्षित जंगल में भिजवा दिया, जहाँ और बहुत-से हाथी आज़ादी से घूमते थे। रोज़ा बहुत खुशी से बड़ी होने लगी। रोज़ा को, सलाखों के पीछे, पिंजरे में बंद देखने के बजाय दर्शक उसे बहुत-से पेड़ों के बीच, दर्जनों केले अब भी निगलते हुए देख सकते हैं।

समाप्त

© BookBox. All Rights Reserved.
www.bookbox.com



Click below to follow us:

